



# BACHO KI MANSIK EVAM SHARIRIK VIKAS ME PARIWARIK SHIKSHA KI BHUMIKA

## बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में पारिवारिक शिक्षा की भूमिका

Dr. Ram Avtar Kapar

शिक्षक, उत्तकर्मित मध्य विद्यालय, अरनामा प्रखंड-खुटौना, जिला-मधुबनी, बिहार-847421

### ABSTRACT

बच्चों के विकास तथा अभिवृद्धि में परिवार का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहता है। कुछ बालक तथा किशोर-किशोरी में तनाव के कारण मानसिक रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसका मूल कारण है कि व्यक्ति परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति, नैतिक स्तर, परस्पर सम्बन्धबद्धता आदि सभी व्यक्ति के मानसिक स्तर को प्रभावित करते हैं। बालक के व्यवहार पर परिवार का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए सबसे पहले परिवार के द्वारा बाल अपराधों को रोकने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षा सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है जिससे परिवार, समाज और राष्ट्रीय एकता पनपती है, वैज्ञानिक तरीके के अमल की संभावना बढ़ती है, समझ और चिंतन में स्वतंत्रता आती है। शिक्षा द्वारा ही आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों के लिए जरूरत के अनुसार मानव-शक्ति का विकास होता है। इसके आधार पर ही अनुसंधान और विकास को सम्बल मिलता है। शिक्षा वर्तमान और भविष्य-निर्माण का अनुपम साधन है। पारिवारिक एकता एक भावात्मक उपलब्धि है। यह कोई ठोस वस्तु या उपलब्धि नहीं है। यह भावना सहिष्णुता, पारस्परिक सद्भाव, सहयोग, उदारता से उत्पन्न होती है। जिस परिवार में ऐसी उदात्त भावनाओं का अभाव होता है, वह परिवार विघटन और टूटने के कगार पर पहुंच जाता है।

**शब्द संकेत :** मानसिक, संवेदनशीलता, शिक्षा, चिन्तन एवं भावनाओं।

### विषय प्रवेश :

परिवार अनौपचारिक और सहज शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र है। यह बच्चों के ज्ञानार्जन तथा प्रथम प्यार-दुलार का केन्द्र है। खेल-खेल में वे मां-बाप तथा अन्य परिजनों से बातचीत करने, उनका अनुकरण करने से तथा सामानों का उपयोग एवं हल्के-फुल्के काम करके आसानी से सहज ही बहुत कुछ सीख लेते हैं। बच्चे परिवार के सदस्यों से बात करने में व्यावहारिक भाषा मौखिक रूप से बचपन से ही सीखने लगते हैं। बच्चों में पारस्परिक व्यवहार एवं आचरण की पहली शिक्षा उन्हें परिवार के संपर्क में ही प्राप्त होती है।

बच्चों के विकास तथा अभिवृद्धि में परिवार का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहता है। कुछ बालक तथा किशोर-किशोरी में तनाव के कारण मानसिक रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। इसका मूल कारण है कि व्यक्ति परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति, नैतिक स्तर, परस्पर सम्बन्धबद्धता आदि सभी व्यक्ति के मानसिक स्तर को प्रभावित करते हैं। बालक के व्यवहार पर परिवार का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए सबसे पहले परिवार के द्वारा बाल अपराधों को रोकने का प्रयास करना चाहिए।

शिक्षा सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है जिससे परिवार, समाज और राष्ट्रीय एकता पनपती है, वैज्ञानिक तरीके के अमल की संभावना बढ़ती है, समझ और चिंतन में स्वतंत्रता आती है। शिक्षा द्वारा ही आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न स्तरों के लिए जरूरत के अनुसार मानव-शक्ति का विकास होता है। इसके आधार पर ही अनुसंधान और विकास को सम्बल मिलता है। शिक्षा वर्तमान और भविष्य-निर्माण का अनुपम साधन है।

पारिवारिक एकता एक भावात्मक उपलब्धि है। यह कोई ठोस वस्तु या उपलब्धि नहीं है। यह भावना सहिष्णुता, पारस्परिक सद्भाव, सहयोग, उदारता से उत्पन्न होती है। जिस परिवार में ऐसी उदात्त भावनाओं का अभाव होता है, वह परिवार विघटन और टूटने के कगार पर पहुंच जाता है।

### शिक्षण-प्रक्रिया में परिवार का महत्व :

परिवार से यह आशा की जाती है कि वह बालकों के व्यवहार को इस प्रकार उचित प्रशिक्षण दे कि वे किसी प्रकार के मानसिक तनाव तथा रोग से ग्रसित न हो पाये। अपनी परिस्थितियों के साथ उचित समायोजन कर सकें तथा बाल अपराधी न बनें। इस प्रकार के प्रशिक्षण की कोई निश्चित तथा पूर्व निर्धारित पद्धति नहीं है। यह परिवार के सदस्यों पर निर्भर करता है कि वे इस प्रकार का प्रशिक्षण अपने व्यवहार तथा पारस्परिक संबंधों के माध्यम से दें। परिवार बालकों को किस प्रकार तथा कैसा प्रशिक्षण देता है, इस बात पर बालकों का व्यावहारिक तथा संवेगात्मक विकास निर्भर होता है।

परिवार एक अनौपचारिक संस्था है जिसके स्थान जन्म से ही बालक के घनिष्ठ संबंध होते हैं। यह संबंध लम्बे समय तक अर्थात् जन्म से किशोरावस्था तथा कभी-कभी वृद्धावस्था तक बना रहता है। इसलिए परिवार बालक के व्यवहारों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने का बड़ा सशक्त साधन है। बच्चे के जन्म के समय यह नहीं कहा जा सकता कि वह बालक बाल-अपराधी बनेगा या समाज का एक उपयोगी सदस्य सिद्ध होगा। यह तो परिवार तथा वातावरण उसे बना देता है।

परिवार के सदस्यों के व्यवहारों में स्थायित्व, नैतिकता तथा स्नेह व प्रेम सभी कुछ बालकों के विकास को प्रभावित करते हैं। परिवार बालक पर किस प्रकार नियंत्रण रखता है-आदि सब बातें बालकों में कर्तव्यपरायणता तथा आज्ञाकारिता की भावना का विकास करती हैं। परिवार के सदस्यों में आत्मसम्मान की भावना का प्रभाव बालकों के संवेगात्मक व्यवहारों पर पड़ता है। परिवार के सदस्यों की आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, शारीरिक संरचना, भाषा, प्रतियोगात्मक योग्यता तथा अन्य उपलब्धियों पर माता-पिता की आत्म-सम्मान की भावना निर्भर करती है जो अन्ततोगत्वा बालक में आत्मसम्मान की भावना को प्रभावित करती है। यदि उस प्रकार की भावना का विकास पर्याप्त मात्रा में न कर सकें या सीमा से अधिक कर ले तो बालक के व्यवहार संतुलित तथा सामान्य नहीं हो पाते हैं।<sup>19</sup>

बाल-अपराधी सामान्यतः मानसिक रोगी ही होते हैं जो परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित नहीं कर पाते हैं और परिवार तथा समाज के प्रति विद्रोह कर बाल-अपराधी बन जाते हैं। इस प्रकार के मानसिक रोगी सामान्यतः छः प्रकार के परिवारों से आते हैं :

पद्ध अपराधी परिवार, ;पपद्ध मृत्यु, तलाक आदि के कारण माता-पिता में एक या दोनों सदस्यों से रहित परिवार, ;पपपद्ध अज्ञानता, अन्धापन, शारीरिक बीमारी आदि के कारण समुचित नियंत्रण न रखने वाला परिवार, ;पअद्ध बालकों की उपेक्षा, पक्षपात, अवहेलना करने वाला परिवार, ;अद्ध जातिगत तथा धार्मिक भिन्नता वाले परिवार, ;अपद्ध आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में निम्न परिवार। विभिन्न शोध अध्ययनों से पता चलता है कि परिवारों का वातावरण ठीक नहीं रहने से बालापराधों की संख्या बढ़ती है।

परिवार तथा आसपास का वातावरण बालकों की भाषा, उच्चारण, शब्द-भंडार तथा विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता को प्रभावित करता है। यदि परिवार के सदस्य अपने दैनिक व्यावहारिक जीवन में परस्पर समृद्ध भाषा तथा विविध शब्द-भंडार का प्रयोग करते हैं तो बालक की भाषा की समृद्ध होती है।

बालक के संवेगात्मक, व्यावहारिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक तथा समायोजनात्मक विकास पर परिवार के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। इन प्रभावों के फलस्वरूप बालक की मनःस्थिति की रूपरेखा बनती है।

मनोस्थिति असंतोषजनक होने पर व्यक्ति मानसिक रोगी होकर असम्यक् व्यवहार करने लगता है तथा पारिवारिक और सामाजिक असामंजस्य हो जाता है। ऐसे रोगियों का इलाज दवा से नहीं होता बल्कि मनोचिकित्सक ही कर सकते हैं। आजकल इस प्रकार की व्यवस्था बड़े-बड़े शहरों में की गई है जिसमें व्यक्ति की समस्या का निदान तथा अनुगामी मानसिक स्वस्थ जीवन के लिए निर्देशन तथा सुझाव दिये जाते हैं।

मनोवैज्ञानिक आश्रम तथा बाल-अपराधी गृह में बच्चों तथा बड़ों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता पैदा कराई जाती है। उनकी कमियों और अपराधों का एहसास कराने के स्थान पर उनके गुणों को सराहा जाता है। उनके अन्दर की सोई हुई प्रतिभा को उभारने का प्रयास किया जाता है यह कार्य शिक्षक और असहयोगियों के माध्यम से प्यार और दुलार से किया जाता है। उनके अपराध और दूर्यवहारों के लिए शारीरिक दंड नहीं के बराबर दिये जाते हैं बल्कि ऐसा वातावरण प्रस्तुत किया जाता है कि वह स्वयं अपनी मूल और कमी का अनुभव करे और उसे सुधारने का प्रयास करे। परिवार, पति अथवा समाज द्वारा तिरस्कृत बालक या नारी को स्नेह, सुरक्षा और सम्मान देकर सुधारा जा सकता है। उसके दिल, दिमाग को खाली न रखकर कार्य में व्यस्त रखने से और उनके कार्यों की प्रशंसा करने से वे लोग भी अपना जीवन सार्थक समझने लगते हैं। उनमें जो जीवन के प्रति निराशा आ गई थी, उसे जीवन की आकांक्षाओं में बदला जा सकता है। अपराधी की निंदा के बजाय उस अपराध का कारण जान कर उस परिस्थिति से मुक्ति दिलाने पर भविष्य में उस अपराध की संभावना कम हो जाती है और धीरे-धीरे वह सद्व्यवहार करने लगता है अपराधी व्यक्ति नहीं होता है। अपराधी होता है परिवार तथा समाज जिसे सुधारना आवश्यक है। परामर्श का उद्देश्य है व्यक्ति में सूझ उत्पन्न करना जो कि आत्मबोध प्राप्त करने में सहायक होती है। मानसिक तनाव या रोग की प्रकृति, स्वरूप, लक्षण तथा गंभीरता आदि का सही पता लगाने पर ही प्रभावकारी उपचार तथा परामर्श संभव है।

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है दूसरे व्यक्ति उसे पसंद करें तथा उसकी बातों, व्यवहारों को स्वीकार करें। सुरक्षात्मक स्थिति एवं सहायतापूर्ण व्यवहार के फलस्वरूप ही पत्नी पति का, पुत्र पिता का, जनता नेता का तथा शिष्य शिक्षक का और रोगी डॉक्टर का सुझाव मानते हैं। मानसिक रोगी समझता है कि मनोचिकित्सक संवेगों तथा मानसिक रोगों के संबंध में

अधिक जानता है। इस कारण उनके सुझावों और पुनः आश्वासन से रोगी अवास्तविक भय, मिथ्या चिन्ताओं तथा संवेगात्मक तनावों से मुक्ति पा लेता है।

सुझावों के क्रम में को ;ब्वनमद्ध ने आत्म-सुझाव विधि का प्रयोग मनोरोगियों पर किया। उनमें आत्मविश्वास जगाया कि वे अच्छे हैं। स्व-विचारों, कथनों और अवधारणाओं के कारण आत्म प्रेरणा मिलती है जो उसे सुधारने में सहायक होती है। उदाहरणस्वरूप 'को' अपने रोगी को कहता है, वह प्रतिदिन कई-कई बार यह दुहराए कि वह धीरे-धीरे ठीक होता जा रहा है। इस प्रकार के स्व-कथनों के कारण आत्म-प्रेरणाप्राप्त कर वह ठीक होने लगता है। यह प्रक्रिया उन्हीं रोगियों पर की जा सकती है जो आत्मसुझावों की स्वतः पुनरावृत्ति कर सकते हैं। इस विधि का प्रयोग गंभीर मनोरोगी पर करना कठिन है।

### शिक्षा द्वारा मानसिक स्थिति के सुधार संबंधी सुझाव :

मनोचिकित्सा मानसिक रोगों के उपचार का व्यावहारिक पक्ष है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किये जाते हैं :

- **मानसिक संघर्षों को कम करना :** मानसिक रोग का मुख्य कारण मानसिक तनाव, द्वन्द्व तथा संघर्ष का परिणाम होता है। मनोचिकित्सक यह प्रयास करता है कि व्यक्ति इन संघर्षों का शिकार न हो। उपचार से बचाव अधिक सफल सिद्ध होता है। परिवार तथा समाज को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि व्यक्ति मानसिक संघर्षों से बचे।
- **वातावरण में परिवर्तन करना :** यदि किसी व्यक्ति का किसी भी प्रकार से पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण दूषित है जिसके कारण असामंजस्य उत्पन्न हो रहा है तो उसके वातावरण में परिवर्तन तथा परिमार्जन करके सुधारने की शिक्षा अनिवार्य है। दूषित वातावरण में रहने से व्यक्ति अव्यवस्थित व्यवहार करने लगता है। उसमें संवेगात्मक अस्थिरता विकास कर जाती है। वातावरण सुखद बनाने की शिक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होती है।
- **धारणाओं में परिवर्तन करना :** कभी-कभी व्यक्ति में अपने प्रति, दूसरों के प्रति अथवा समाज के प्रति दूषित धारणाओं का विकास हो जाता है। उसमें भ्रम, भय तथा चिन्ता अनेक दूषित धारणाओं के कारण होती है। उदाहरणस्वरूप किसी व्यक्ति ने चोरी नहीं की परंतु चोरी के जुल्म में पकड़ा जाता है। लोग से चोर कहने लगते हैं, ऐसी स्थिति में वह विद्रोही हो जाता है। पुलिस से डरने लगता है। वह घर में ही बन्द रहने लगता है। ऐसे व्यक्तियों को स्वयं तथा दूसरों के प्रति उनकी क्या धारणाएँ हैं इसे बदलने की शिक्षा देनी चाहिए। जब उनकी धारणाएँ संशोधित हो जाती हैं तब उन्हें वास्तविकता का ज्ञान होता है और उनका भ्रम तथा भय दूर हो जाता है।
- **संवेगात्मक रेचन :** कुछ व्यक्ति अपने संवेगों की अभिव्यक्ति नहीं कर पाते। अनाव्यक्त संवेग व्यक्ति के मस्तिष्क में बने रहने पर अनेक प्रकाशन का मार्ग तलाश करते हैं। फलस्वरूप मानसिक तनाव तथा द्वन्द्व बढ़ जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को यदि यह अवसर दिया जाय कि वह अपने संवेगों का प्रदर्शन अथवा अभिव्यक्ति कर सके तो उसका मानसिक संघर्ष कम हो जाता है। दुख के संवेग को रोककर आँसू बहा लेने से भी मन हल्का हो जाता है। मनोचिकित्सक अपने रोगियों को मुक्त एवं निर्भय होकर अपनी समस्त बातें बताने के लिए प्रेरित करता है। ऐसा वातावरण तैयार कर देता है कि रोगी अचानक रो कर या हँस कर अथवा उत्तेजित होकर सभी बात बता देता है। संवेगों की अभिव्यक्ति हो जाने से मानसिक तनाव तथा संघर्ष कम हो जाते हैं।

- **सहायता प्रदान करना :** विभिन्न परिस्थितियों में कुछ व्यक्तियों की ये समस्याएँ होती हैं कि वे व्यक्ति एक-दूसरे को परिस्थिति और वातावरण के साथ समायोजित नहीं कर पाते। पति-पत्नी, परिवार के सदस्यों को तथा वातावरण को गलत रूप में समझते हैं। अपनी विभिन्न प्रकार की समस्याओं अथवा एक ही प्रकार की समस्या के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं। ऐसे व्यक्तियों को दूसरों के सुझाव, सहायता, शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है जिसके द्वारा अपनी समस्याओं की वास्तविकता को समझ सकें तथा उनका समाधान स्वयं ही करके समायोजन बना सकें। ऐसे मनोरोगी को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता एवं शिक्षा दी जाती है जिसके आधार पर व्यक्ति अपनी समस्या को गंभीरता की वास्तविकता से पहचाने या उसके साथ समायोजन स्थापित कर लें।
- **अन्तर्दृष्टि का विकास करना :** मानसिक असंतुलित व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि उसमें शिक्षा द्वारा ऐसी अन्तर्दृष्टि का विकास किया जाय कि वह अपने संवेगों, संघर्षों तथा समस्याओं को न केवल सही रूप में समझे अपितु अपनी क्षमताओं, योग्यताओं तथा सीमाओं का भी आत्मबोध करे। इस आत्म-बोध के आधार पर ही वह अपनी इच्छाओं, विचारों का व्यक्तियों तथा समस्याओं के साथ समायोजन कर सकता है।
- **व्यक्तित्व परिवर्तन करना :** कुछ व्यक्तियों में कभी-कभी कुछ बुरी आदतें पड़ जाती हैं या समस्याओं का समाधान करने की गलत विधियाँ विकसित हो जाती हैं। व्यक्ति अपने जीवन के लक्ष्य तथा दर्शन गलत ढंग से निर्धारित व निश्चित कर लेते हैं। उसके मन में किसी-न-किसी प्रकार की कुण्ठा विकसित हो जाती है। ऐसी स्थिति में उचित सुझाव देकर व्यक्ति के जीवन-दर्शन तथा लक्ष्यों में आवश्यक परिवर्तन लाये जाते हैं। जीवन से निराश व्यक्तियों में आशा का संचार स्नेह और प्यार के माध्यम से किया जा सकता है। मनोचिकित्सक के द्वारा पुनः शिक्षा तथा पुनः आश्वासन के द्वारा व्यक्तित्व में वांछनीय लाये जा सकते हैं। लेकिन इसके लिए काफी धैर्य तथा समय की आवश्यकता होती है।

व्यक्ति को इस प्रकार की शिक्षा तथा सहायता देना कि वह अपने मनोभावों तथा सामाजिक वातावरण के साथ सफलतापूर्वक समायोजन कर सके। यदि वैवाहिक तथा पारिवारिक समायोजन सफलतापूर्वक हो जाये तो वह मानसिक तनावों तथा रोगों से बच सकता है। इसके लिए बच्चों की अभिरुचि, उनकी उम्र, शक्ति तथा उनके अनुकूल वातावरण एवं क्रियाशीलन की व्यवस्था पवर बल देना चाहिए। बालकों को अनुशासन की शिक्षा बिना भय तथा दंड के स्नेहपूर्ण वातावरण में देनी चाहिए। बाल्यावस्था मानव-जीवन की वह अवस्था है जो मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास की आधारशिला है।

#### पूर्व अध्ययनों की समीक्षा :

अध्ययनों की समीक्षा के लिए विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों एवं शोध आलेखों का अध्ययन किया गया है। जिसमें प्रमुख है :

के0 एल0 रेड्डी (1995) ने बच्चों के लिए सामाजिक सुरक्षा में सुधार से संबंधित अपने विचारों को प्रस्तुत किया है। कुछ राज्य सरकारों ने बच्चों के लिए पौष्टिक योजना लागू किया है। लेकिन इससे लाभ बहुत ही सीमित है। उसे पाने में भी काफी परेशानी होती है। बच्चे अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं, जो निम्न-मध्यम, मध्यम या उच्च मध्यम आय वर्गों के होते हैं, ये लोग अभावग्रस्तता के शिकार होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की स्थिति अत्यंत दयनीय है।

वैद्यनाथन (1996) इस प्रकार अधिकांश अध्ययन ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के बच्चों पर आधारित है। विशेष कर ग्रामीण समाज में

बच्चों की दशा पर मनोवैज्ञानिकों को ध्यान देना चाहिए। उनकी स्थिति पर एवं उनके सामाजिक सुरक्षा के संबंध में विचार करनी चाहिए।

पी0 भी0 राममूर्ति (2013) ने बच्चों के संदर्भ में सामाजिक-मनोवैज्ञानिक पक्षों को स्पष्ट किया है तथा उनकी समस्याओं, प्राथमिकताओं एवं दृष्टिकोणों को भी प्रस्तुत किया है।

स्वामीनाथन (2019) ने भारत के सामाजिक समस्या में बच्चों की शिक्षा की समस्या को सम्मिलित किए जाने के पक्ष में विचार दिया है। उनके विचार से बच्चों की स्थिति को एक समस्या के रूप में देखा जाना चाहिए। इनकी समस्या को राष्ट्र की समस्या से जोड़ना चाहिए। ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही क्षेत्रों में बच्चों से संबंधित जो अध्ययन प्राप्त हुए हैं, उनसे पता चलता है सामाजिक परिस्थिति में बच्चे प्रसन्न नहीं रहती है।

#### अध्ययन का उद्देश्य :

बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में पारिवारिक शिक्षा की भूमिका के अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित है :-

- इस अध्ययन के आधार पर बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में पारिवारिक शिक्षा की भूमिका का तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।
- वर्तमान अध्ययन के आधार पर बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में पारिवारिक शिक्षा के लिए आवश्यक सुझाव भी प्रस्तुत किया गया है।

#### अध्ययन पद्धति :

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्तमान अध्ययन बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास में पारिवारिक शिक्षा की भूमिका के विविध पक्षों के अन्वेषण से संबंधित है अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत पत्र-पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया है।

#### बच्चों की आदत को सुधारने हेतु सुझाव :

शिक्षा का कार्य है बालकों में अध्ययन तथा वांछित कार्यों को करने की आदत का निर्माण करना। बालकों में अध्ययन की आदतों का विकास इस प्रकार किया जा सकता है-

- बच्चों को विषय के अध्ययन का उद्देश्य ठीक प्रकार से समझा दिया जाना चाहिए।
- जहाँ पर बैठकर बालक पढ़ते हों, वहाँ पर किसी प्रकार की बाधाएं नहीं होनी चाहिए।
- बालकों के अध्ययन का समय निश्चित कर लेना चाहिए। अध्ययन की योजना पहले से ही बना लेनी चाहिए।
- अध्ययन करते समय थोड़ी-थोड़ी देर में विश्राम करना चाहिए।
- अध्ययन के समय मौन पाठ पर बल देना चाहिए।
- अध्ययन में खण्ड विधि से नहीं पढ़ना चाहिए।
- पढ़ते समय सावधानी तथा शीघ्रता, दोनों का पूरा-पूरा ख्याल रखना चाहिए।

- छात्रों को चाहिए कि पढ़ते समय उस विषय के नोट्स अवश्य लिया करें।
- अध्यापक को पाठ संबंधी कठिनाइयों का निवारण अवश्य करना चाहिए।
- अध्ययन के समय प्रमुख प्रश्नों का हल स्वयं ही निकालने की प्रक्रिया पर बल दिया जाना चाहिए।
- अध्ययन की गई सामग्री का सारांश तैयार करने की आदत डालनी चाहिए।
- गृहकार्य करने तथा उसको देखने का नियम बनाया जाए।
- शोधकर्ता के विचारों को सावधानीपूर्वक हृदयंगम करने एवं शंकापूर्ण स्थानों पर चेतावनी देने की प्रक्रिया पर बल दिया जाए।
- अध्यापक को सहायक सामग्री का उपयोग अत्यंत सावधानीपूर्वक करना चाहिए।
- एक विषय पर अनेक विद्वानों की राय को एकत्र करना चाहिए।
- शब्दकोष तथा विश्वकोष के उपयोग करने का कौशल आना चाहिए।

#### बच्चों की समस्याओं का समाधान हेतु सुझाव :-

- परम्परागत भारतीय समाज में सामुदायिक जीवन बच्चों को अपनी किसी समस्या का एहसास नहीं होने देता था। इसलिए सामुदायिक जीवन को प्रोत्साहित करने हेतु उपयुक्त उपाय किए जाए। सामुदायिक स्तर पर बच्चों के लिए मनोरंजन के उचित साधनों का विकास किया जाना चाहिए।
- सरकार को असहाय बच्चों हेतु सुलभ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करनी चाहिए, जिनमें समुचित सुविधाएँ उपलब्ध हों। इनका खर्च सरकार को वहन करना चाहिए तथा गैर-सरकारी संस्थाओं को भी इस प्रकार के चिकित्सालय खोलने तथा उनका संचालन करने के लिए वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए।
- स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान का उत्तरदायित्व सरकार को लेनी चाहिए। निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए। विभिन्न स्तरों के सरकारी अस्पतालों में बच्चों की चिकित्सा हेतु अलग विभाग की स्थापना की जानी चाहिए। जिला से लेकर ग्रामीण स्तर तक 'मोबाइल वेन' से चिकित्सा कार्य करवाना चाहिए, जो सप्ताह में एक या दो बार विभिन्न गांवों का दौरा करें एवं बच्चों को मुफ्त में सलाह एवं दवा उपलब्ध करावें। वैज्ञानिकों को चाहिए कि बच्चों की स्थिति का निरंतर सर्वेक्षण कराकर उनकी समस्याओं को पहचान कर, इस दिशा में कार्य करने हेतु दिशा-निर्देश करें।

#### निष्कर्ष :

बच्चों के विकास में पारिवारिक शिक्षा का महत्त्व के अध्ययन से पता चलता है कि बच्चों की जीवन शैली में आधुनिकतापन का समावेश होता जा रहा है। ग्रामीण परिवेश आज भी परम्परागत रूढ़िवादिता के बंधन में आज भी बंधा हुआ है। एक ओर शहर के बच्चों का जीवन शैली के प्रभाव उसके पारिवारिक सदस्यों पर पड़ता है जिसके कारण संयुक्त परिवार का विखण्डन हो रहा है और एकल परिवार का प्रचलन बढ़ गया है। किन्तु आर्थिक सुदृढ़ता में सार्थक सिद्ध हुआ है। वहीं ग्रामीण बच्चों को आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ता है और पारिवारिक संबंधों को बनाये रखने में अपने आप को समर्पित करना पड़ता है। पारिवारिक शिक्षा का

स्तर ग्रामीण बच्चों की अपेक्षा शहरी बच्चों में अधिक ऊँचा पाया गया। ग्रामीण बच्चों के माता-पिता का शैक्षणिक स्तर शहरी बच्चों के माता-पिता से काफी नीचे पाया गया। ग्रामीण बच्चों का शैक्षणिक स्तर भी शहरी बच्चों की अपेक्षा कम पाया गया। बौद्धिक विकास के क्षेत्र में भी शहरी बच्चों की अपेक्षा ग्रामीण बच्चों का स्तर नीचे पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों के विकास से संबंधित अवसरचना का अभाव पाया गया जिसे दूर कर ग्रामीण बच्चों को भी शहरी बच्चों की तरह विकसित किया जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर पारिवारिक शिक्षा का प्रभाव अहम होता है।

#### संदर्भ स्रोत :

- I. Vaidyanathan (1996) Psychology in India, A.P.H. Prakashan, New Delhi, pp. 38-42.
- II. K.L. Reddy (1995) Psychological Immunity: A Parents First Line of Defense, First Page Publications, New Delhi, pp. 51-53.
- III. Ramamurti P.V (2013) An Introduction to Psychological Measurements, PHI Publication, New Delhi, pp. 101-102.
- IV. Swami Nathan (2019) Play and Curriculum: Play & Culture Studies: Hamilton Books, Bangalore, pp. 23-25.